आरती श्री राधिका जी की

आरती श्री वृषभानुसुता की,
मंजुमूर्ति मोहन ममता की ।। टेक ।।
त्रिविध तापयुत संसृति नाशिनी,
विमल विवेकविराग विकासिनि,
पावन प्रभु पद प्रीति प्रकासिनि,
सुन्दरतम छवि सुन्दरता की ।।१।।
मुनि मन मोहन मोहन मोहनि,
मधुर मनोहर मूरति सोहनि,
आविरलप्रेम अमिय रस दोहनि,
प्रिय अति सदा सखी ललिता की ।।२।।
संतत सेव्य सत मुनि जनकी,
आकर अमित दिव्यगुन गनकी
आकर्षिणी कृष्ण तन मनकी,
अति अमुल्य सम्पति समता की ।।३।।
कृष्णात्मिका, कृष्ण सहचारिणि,
चिंतयवृन्दा विपिन विहारिणि,
जगज्जननि जग दुःखनिवारिणि,
आदि अनादिशक्ति विभुता की ।।४।।

विवरण

वृषभानु की पुत्री राधिका जी की हम आरती करते हैं । इनका मुख अत्यन्त मनोहर एवं स्नेही तथा मोहक लगने वाला है । ये सम्पूर्ण संसार के पाप तापों का हरण करने वाली हैं एवं हमें निर्मल बुद्धि प्रदान कर प्रभु के पवित्र चरणों के प्रति प्रेम स्मी प्रकाश को फैलानेवाली हैं ।

आपकी इस मनोहर छवि की सुन्दरता अनुपम है । भगवान श्री कृष्ण ऋषि - मुनियों के मन को मोहने वाले हैं और श्री कृष्ण के मन को मोहने

वाली आप हैं । आपके स्म की छवि हमारे मन को बड़ी ही प्रिय लगती है, आपका स्नेह हमारे प्रेम को दोहरे स्म से प्रगाढ़ बनाता है । आप हमेशा अपनी सखी ललिता की प्रिय रही हैं । मुनि लोग आपके गुणों का गान करते एवं सेवा करते थकते नहीं हैं ।

आप श्री कृष्ण के तन-मन को अपनी ओर खींचने वाली हो । आपके इस श्री कृष्ण स्मी धन की कोई बराबरी नहीं कर सकता । आप श्री कृष्ण की आत्मा बनकर सदा उनका साथ निभाने वाली हो तथा वृन्दावन की फुलवारी में नित्य विहार करनेवाली हो एवं पूरे संसार की माता बनकर इस जग के लोगों के दुखों का विनाश करनेवाली हो तथा इस जग की शक्ति के स्म में भी विभूषित रहती हो।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.